वर्ष-2 अंक-9 सितंबर 2018

जे 7 श्रीमरामनबर रायपुर (छ.ग.)

आर.एन.आई पंजीकरण क्रमांक

CHHHIN/2017/72506

किलोल

संपादक - डा. आलोक शुक्ला
सह-संपादक - एम. सुधीश

संपादक मंडल -
राजेंद्र कुमार विश्वकर्मा , शेख अजहरुद्दीन

प्यारे बच्चों,

इस बार हमें किलोल के लिये बहुत सी रचनाएं प्राप्त हुई हैं. हमारा प्रयास है कि अधिक से अधिक रचनाओं को किलोल मे स्थान मिले. इसलिये यह अंक कुछ बड़ा हो गया है. मुझे आशा है कि आपको अच्छा लगेगा. कुछ समय पहले बाल कामिक्स और बच्चों के बनाए चित्रों का प्रकाशन हमने शुरू किया था. इस बार हम इस प्रयोग को और आगे ले जा रहे हैं. बच्चों की रचनात्मकता को बढ़ाने का हमारा यह प्रयास भी आपको अवश्य पसंद आयेगा. इस अंक में हम फिर से अंग्रेज़ी और हिन्दी के शब्दों को मिलाकर कहानियां प्रकाशित कर रहे हैं. अंग्रेज़ी शब्दों के अर्थ साथ में दिये गये हैं. हमारा विश्वास है कि खेल-खेल में अंग्रेज़ी सीखने में यह कहानियां बच्चों की मदद करेंगी. इस बार की वर्गपहेली छत्तीसगढ़ी भाषा के शब्दों पर आधारित है जो दीपक कंवर जी ने बनाई है. अन्य लोग भी इस प्रकार के प्रयोग करके हमें भेजें तो हमें खुशी होगी. इस अंक में छत्तीसगढ़ के बाहर के कुछ लेखकों की रचनाएं भी हैं. किलोल पूरे हिन्दी क्षेत्र के बच्चों में लोकप्रिय हो रहा है. यह प्रसन्नता की बात है. हमेशा की तरह किलोल http://alokshukla.com/Books/BookForm.aspx?Mag=Kilol पर नि:शुल्क डाउनलोड के लिये उपलब्ध है.

आलोक शुक्ला

<u>खारा समुद्र</u>

लेखिका - तारिणी साहू कक्षा पांचवी प्रा.शा. बरगाही, राजनांदगांव

एक गांव में 2 भाई रहते थे. एक भाई अमीर था, दूसरा गरीब. एक दिन गरीब भाई अपने अमीर बड़े भाई के पास मदद मांगने गया. बड़े भाई ने इंकार कर दिया. वापस आते समय रास्ते में उसे एक बूढ़ा आदमी मिला. बूढे ने उससे कहा - 'मैं बहुत भूखा हूं. मुझे कुछ खाने को दो.' गरीब भाई की पत्नी ने उसे रास्ते के लिये मालपुए बनाकर दिये था. वह मालपुए उसने बूढ़े आदमी को दे दिये. मालपुए खाकर बूढ़े की भूख मिट गई. उसे तृप्ति हो गई. वह खुश होकर गरीब भाई से बोला - 'तुम इतने उदास क्यों हो ?' गरीब भाई ने कहा - 'मेरे पास खाने-पीने को कछ भी नहीं है. मेरे भाई ने भी मदद से इंकार कर दिया है. अब मैं क्या करूं ?' बूढे ने गरीब भाई को एक चक्की दी और कहा कि इससे जो मांगोंगे वही यह देगी. घर जाकर गरीब भाई ने कहा 'चक्की-चक्की चावल दे.' चक्की से चावल निकल पड़े. जब काफी चावल निकल आये तो गरीब भाई ने चक्की को एक कपड़े से ढ़ाक

दिया और चावल निकलना बंद हो गए. गरीब भाई ने पूरे परिवार सहित चावल खाए और बचे हुए चावल बाज़ार में बेच दिये. अब तो रोज़ ही वह चक्की से अलग-अलग वस्तुएं मांगता और उन्हें बाज़ार में बेच देता. कुछ ही दिनों में वह अमीर हो गया.

बड़े भाई को आश्चर्य हुआ कि उसका छोटा भाई इतने कम समय में अमीर कैसे हो गया. उसने छोटे भाई के घर जाकर चुपके से सब कुछ देखा. जब उसने देखा कि बिना काम के ही चक्की सब कुछ देती है तो उसने चक्की को चुरा लिया. किसी को पता न लगे इसिलये वह अपनी पत्नी और बच्चो के साथ एक नाव मे बैठकर निकल पड़ा. रास्ते में जब उन्हे भूख लगी तो पत्नी ने पोटली से भोजन निकाला. जल्दी में उसकी पत्नी भोजन में नमक डालना भूल गई थी. अब अमीर भाई ने चक्की निकाली और कहा 'चक्की-चक्की नमक दे.' चक्की से नमक निकलना शुरू हो गया. परंतु अमीर भाई को यह पता नहीं था कि चक्की से नमक निकलना बंद कैसे करे. नमक निकलता ही रहा. नमक के बोझ से नाव डूब गई. वह चक्की आज भी चल रही है और समुद्र के पानी में नमक मिला रही है. इसीलिये समुद्र का पानी खारा है.

इस कहानी से हमें शिक्षा मिलती है कि लालच बुरी बला है.

नोट - यह मनोरंजन के लिये केवल एक कहानी है. वास्तव में समुद्र का पानी खारा होने का कारण यह है कि सभी नदियां मिट्टी के साथ अनेक प्रकार के लवण भी समुद्र में बहाकर लाती हैं. सूर्य के ताप से समुद्र का पानी भाप बनकर उड़ जाता है, पर लवण उसी में रह जाते हैं. इस कारण समुद्र के पानी में लवण की मात्रा अधिक होती है और समुद्र का पानी खारा होता है.

लालची मच्छर

लेखक - दीपक कुमार कंवर

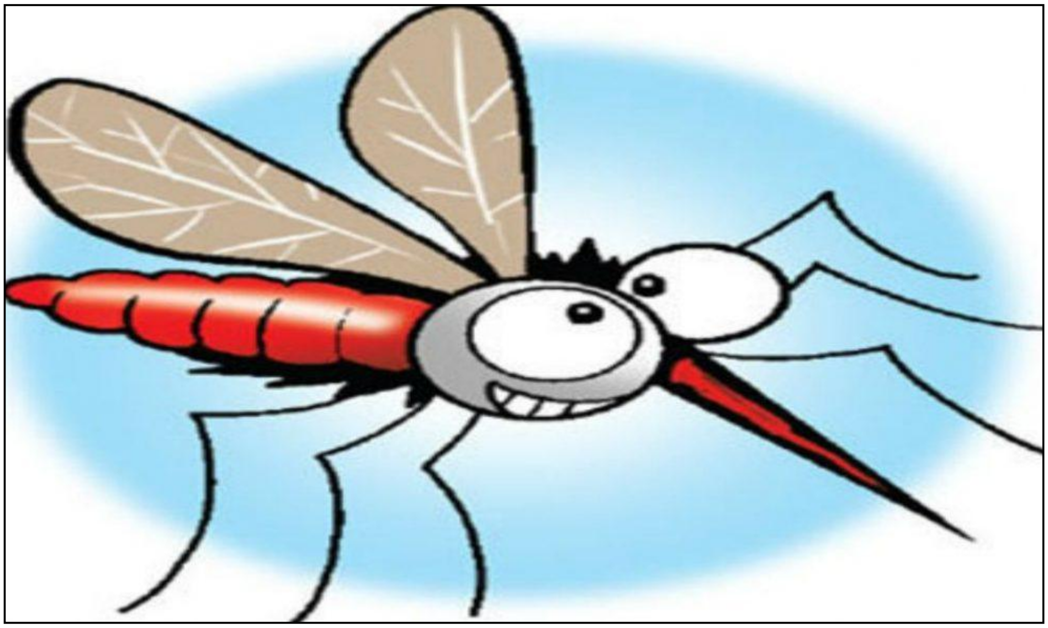

चट्टु मक्खी और पट्टु मच्छर दोनो मित्र भोजन की तलाश मे निकले. एक घर मे बहुत बढिया-बढ़िया स्वादिष्ट पकवान बन रहा था. सुगंध पाकर दोनो वहीं रुक गए और तय किया गया की बारी-बारी मौका पाकर यहीं भोजन ग्रहण करेंगे.

सबसे पहले चट्टु ने भोजन को छककर खाने का आंनद लिया, तब तक पट्टु देखरेख मे लगा था. फिर उसकी की बारी आई तो पकवान की सुगंध पाकर सोचने लगा - वाह पकवान इतना सुगंधित है तो इसको खाने वाले का स्वाद कैसा होगा, क्यों न उसको खाया जाये. वह पकवान छोड़कर वापस आ गया और अपने मित्र चट्टु को अपना विचार बताया. चट्टू ने उसे समझाते हुए कहा - मित्र जो भी मिल रहा है उसे खा लो. ज्यादा लालच करना अच्छी बात नहीं है. पट्टु मच्छर ने उसकी एक न सुनी और भिनभिनाते हुए चला गया.

उस घर मे मेहमान आये हुए थे और सभी पकवान खाने मे मगन थे. इधर पट्टु का भूख के मारे बुरा हाल था. वह सीधे पकवान खाने वाले इंसान के पास गया. आव देखा न ताव स्वाद लेने के लिए डंक मारा. अचानक जोर से सटाक की आवाज आयी और पट्टु मच्छर मारा गया.

<u>जहां चाह वहां राह</u>

लेखिका - खुशबू शर्मा

उषा एक समान्य से गांव की समान्य स्वाभाव वाली लड़की थी. आज मुझे उसे देखकर बडा गर्व हो रहा है. आज वो दिन याद आ रहा है जब मेरी मुलाकात उषा से हुई थी. कीचड़ से सनी हुई स्कूल बैग पकड़े अपनी यूनिफार्म को पोछती हुई. उषा अपने कपड़ा साफ करते-करते बड़-बड़ा रही थी - 'क्यों लोग यहां सड़क नही बनाते. सबको इसी कीचड़ भरे रास्ते से होकर आना-जाना पड़ता है. फिर भी कोई इस रास्ते की मरम्मत करवाने का क्यों नही सोचता. रोज मुझे कीचड़ वाले कपड़े में ही स्कूल जाना पड़ता है.'

मैंने उषा से पूछा - 'क्या हुआ उषा ?' उषा ने हँसकर जबाव दिया - 'आज फिर होली खेली मैड़म जी.' उस दिन हम साथ-साथ स्कूल गये. उषा रास्ते भर कीचड़ और उससे होने वाली परेशानी की शिकायत करती रही. मैने कहा - 'उषा हमें शिकायत से पहले सुधार पर ध्यान देना चाहिए. अगर हम सब मिलकर प्रयास करें तो हर समस्या का समाधान हो सकता है.' उषा ने विश्वास भरे शब्दों मे कहा - 'हां मैडम! अगर सब मिलकर प्रयास करेंगे तो इस समस्या का समाधान भी हो जायेगा.' उसने घर आकर तुरंत अपने माता-पिता और सरपंच जी से बात की और घर-घर जाकर सबको श्रमदान के लिये प्रेरित किया. देखते ही देखते सबके प्रयासो से वह दलदल भरा रास्ता साफ-सुथरी सड़क में बदल गया. सबकी मेहनत और उत्साह को देखकर सरपंच ने उस कच्ची सड़क को पक्की सड़क बनवाने की ठान ली. आज हम इसी पक्के रास्ते से होकर दशपुर गांव में आये हैं. आज ये गांव आस-पास के सभी गांवों से अधिक विकसित और शिक्षित बन चुका है. आज यहां कई दुकाने है, स्कूल है, स्वास्थ्य केन्द्र और कई सेवा केन्द्र हैं. यहां प्रतिवर्ष मेला भी लगता है. उषा की प्रेरणा और प्रयासों के कारण गांव की हर महिला शिक्षा और आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रही है. आज दशपुर के लोग छोटी-छोटी जरूरतों के लिये सरकार को नही कोसता बल्कि अपनी समस्याओं का समाधान ग्राम स्तर पर स्वंय करने का प्रयास करते हैं. उषा ने इस पिछडे गांव का नक्शा ही बदल दिया. मुझे गर्व है की मैं उषा की शिक्षिका हूं.

<u>Ant and the Grasshopper</u>

Author - Dilkesh Madhukar

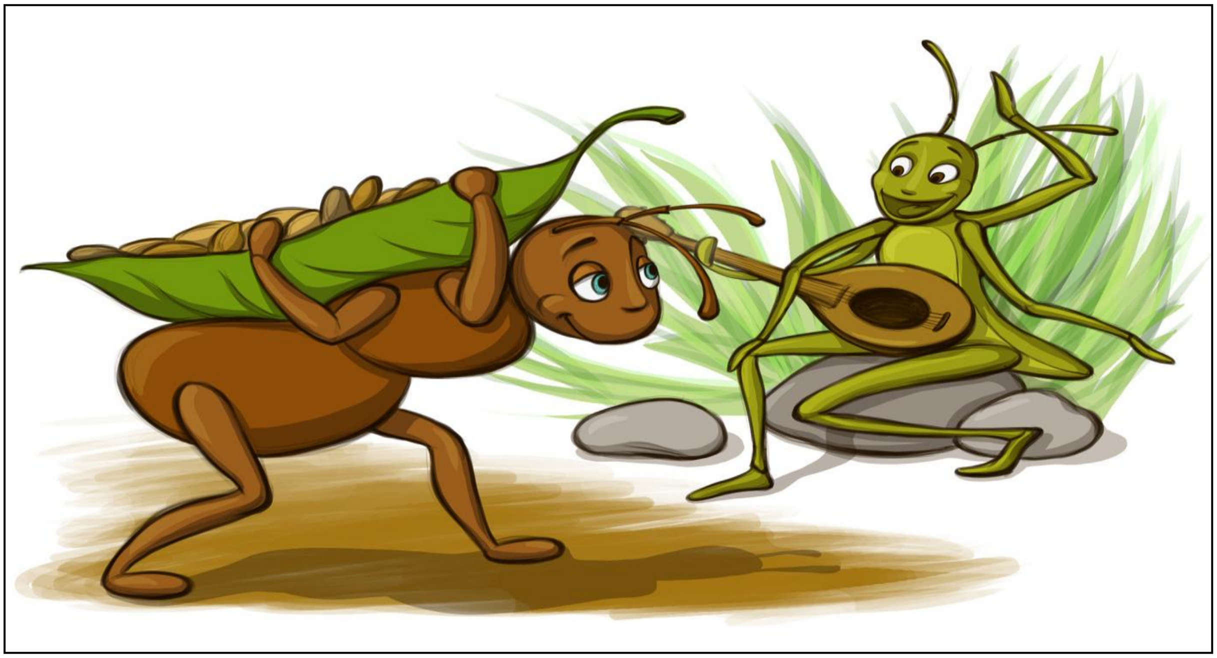

A lazy grasshopper laughed at the little ant as she was always busy gathering food. "Why are you working so hard?" he asked. “Come into the sunshine and listen to my merry notes.” But the ant went on working. She said "I am storing food for the winter. Sunny days don't last forever."

“Winter is so far away”, said the grasshopper as he laughed again.

And when the winter came the ant settled down in her cozy house. She had plenty of food to last the whole winter. The grasshopper had nothing to eat so he went to the ant and begged her for a

little corn. “No”, replied the ant "You laughed at me when I worked. You enjoyed the summer. Now dance the winter away."

Moral - Idleness is a curse.

Word meaning

Lazy - आलसी

Gather - इकट्ठा करना

Cozy - सुखद

Beg - विनती करना

Corn - अनाज, मक्का

Idleness - आलस्य

Curse - शाप

Magical Sheep

लेखिका - कु.कविता कोरी

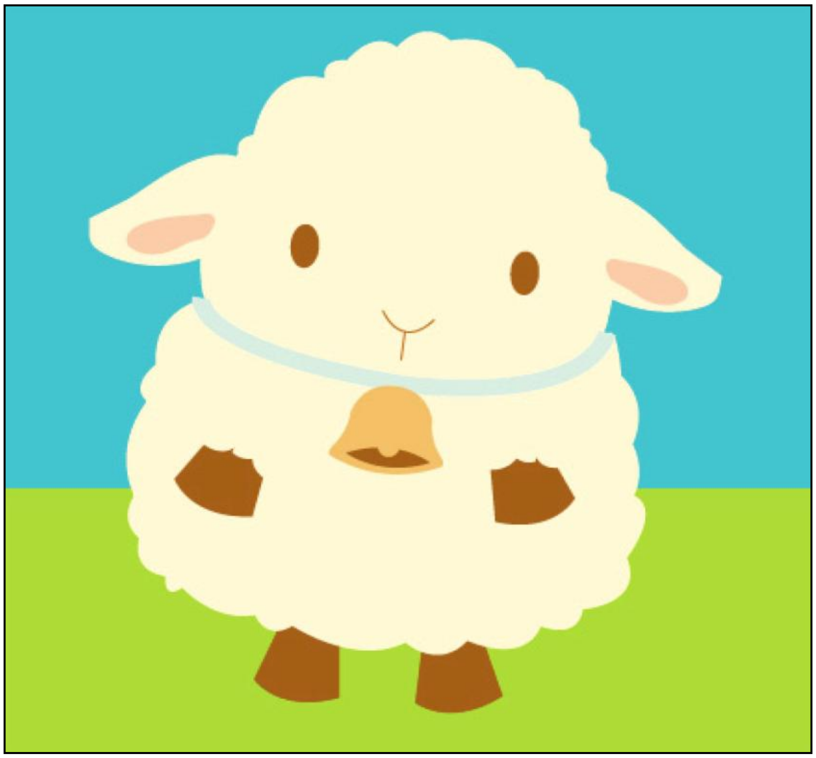

एक Village में एक Shepherd सूरज रहता था. उसके पास एक Sheep था जिससे उसका बहुत Attachment था. वह Village के Domestic animals को Jungle में चराकर अपने sheep के साथ Happily रहा करता था. उसके Neighbors रामू व श्यामू उसे देखकर Jealous थे. वे मन ही मन सोचते कि क्यों ना उसका sheep हड़पकर उसके Happiness को Sadness में बदला जाए.

एक साल Village में वर्षा कम हुई. इसी पर उन्होंने एक Plan बनाया. रामू Monk के भेष में आया और उसने गांव वालों से कहा कि बारिश कम होने की वजह वह sheep ही है. उसने सबसे उस Sheep को Village से निकाल देने को कहा. सूरज sad हो गया पर Village की भलाई के लिए उसने sheep का त्याग करने का मन बना लिया.

Next day श्यामू सूरज के House में Sheep खरीदने की बात करने आया. पर सूरज भोर होते ही sheep को sell करने दूसरे Village की ओर निकल गया था. रास्ते में Forest था. उसने Robbers के Fear से Coins से भरी अपनी छोटी-सी पोटली sheep के गले में बांध दी थी. रास्ते में वह एक Inn में रूका. उसने sheep को बाहर बांध दिया और पोटली निकाल ली. उन Coins में से एक coin sheep की Bell में फंस गया. कुछ देर बात Sheep ने अपना head हिलाया तो coin नीचे गिर गया. Innkeeper की नज़र उस पर पड़ी. Innkeeper ने imagine किया कि यह Magical sheep है और Coins देती है. वह Greedy हो गया और उसने सूरज से यहाँ आने का reason पूछा. सूरज ने उसे sheep sell करने की बात कही.

Innkeeper यह सोचकर Happy होता है कि maybe इसे magical sheep की mystery नहीं पता. वह कहता है "Brother I will help you. मै इसे buy कर लेता हूँ कह कर sheep का दस गुना दाम देकर झट से sheep ले जाता है. सूरज सब भगवान की मर्जी मानकर वापस house आकर पैसे गिनने लगता है तभी रामू व श्यामू उसे इतने सारे money के साथ देखते है और कारण पता चलने पर सर पीटते अपने घर को जाते है.

शिक्षा - "इस कहानी से हमें शिक्षा मिलती है कि किसी का बुरा करने से अपना भला नहीं होता है." लालच पर रोक और मेहनत पर जोर से ही हमारी प्रगति हो सकती है."

Word Meaning -

Village - गांव

Shepherd - चरवाहा

Sheep - भेड़

Attachment - लगाव

Domestic animal - पालतू जानवर

Jungle - जंगल

Happily - आनंद से

Neighbor - पड़ोसी

Jealous - ईष्या

Happiness - खुशी

Sadness - उदासी

Plan - योजना

Monk - साधु

Sad - उदास

Next day - अगले दिन

House - घर

Sell - बेचना

Forest - जंगल

Robbers - लूटेरे

Fear - डर

Coin - सिक्का

Bell - घंटी

Head - सर

Innkeeper - सराय का मालिक

Imagine - कल्पना

Magical sheep - जादूई भेड़

Greedy - लालची

Reason - कारण

Maybe - शायद

Mystery - रहस्य

Brother - भाई

I - मै

Help - सहायता

You - तुम

Buy - खरीद

Money - धन

<u>मातृभूमि</u>

लेखिका - दीप्ति दीक्षित

एक वन में एक सुंदर झील थी. उसमें बहुत सी छोटी-बड़ी मछलियाँ, मेढ़क, कछुए एवं अन्य जल के जीव सुखपूर्वक रहते थे. झील के किनारे छायादार पेड़ लगे थे. उन पेड़ो पर दूर-दूर से पक्षी आकर बसे थे और झील में पानी पीते तथा क्रीड़ा करते थे. लम्बे समय से वर्षा न होने के कारण धीरे-धीरे झील का पानी कम हो गया. गर्मी के दिनों में झील का पानी जल्दी गर्म हो जाता था. अब झील में पक्षियों के लिए नहाना और पानी पीना कठिन हो गया. झील के किनारे पेड़ों पर रहने वाले पक्षी उसे छोड़ कर दूसरे स्थान पर चले गये. कुछ समय बाद झील के मेढक औऱ कछुए आदि भी झील छोड़कर जाने लगे. इनमे से एक बूढ़े मेढ़क ने सभी से कहा, ‘यह झील हम सभी की मातृभूमि है. इसमें हम सभी ने जन्म लिया, पले बढ़े, खेले-कूदे और इसने ही हमें आश्रय भी दिया. आज झील में पानी कम

होने के कारण इसका त्याग उचित नहीं. आओ हम सब मिलकर प्रार्थना करें कि जल्दी से जल्दी भारी वर्षा हो और झील भर जाए.' उस बूढ़े मेढ़क की बात किसी ने नहीं सुनी और वे सभी झील छोड़कर चले गए. बूढ़ा मेढ़क और मछलियाँ झील में ही रह गए. बूढ़े मेढ़क और मछलियों ने प्रार्थना की, और उनकी प्रार्थना भगवान ने सुन ली. वर्षा होने लगी, जिससे झील छोड़कर गये सभी जीव वापस आ गये और वे सब हसी खुशी झील में रहने लगे तथा दोबारा झील को कभी नही छोड़कर जाने का संकल्प लिया.

कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी -

चतुर बिल्ली

एक चिड़ा पेड़ पर घोंसला बनाकर मजे से रहता था. एक दिन वह अच्छी फसल वाले खेत में पहुंच गया. वहां खाने पीने की मौज से बड़ा ही खुश हुआ. उसके दिन मजे में वहीं बीतने लगे. इधर शाम को एक खरगोश उस पेड़ के पास आया जहां चिड़े का घोंसला था. पेड़ जरा भी ऊंचा नहीं था. खरगोश ने झांक कर देखा. घोंसला खाली पड़ा था. उसे यह बना बनाया घोंसला पसंद आ गया और वह उसमें रहने लगा. कुछ दिनों बाद वह चिड़ा वापस लौटा. उसने देखा कि घोंसले में खरगोश आराम से बैठा हुआ है. उसे बड़ा गुस्सा आया, उसने खरगोश से कहा, ‘‘चोर कहीं के, मैं नहीं था तो मेरे घर में घुस गए हो ? चलो निकलो मेरे घर से’’.

खरगोश ने जवाब दिया - “कौन सा तुम्हारा घर? यह तो मेरा घर है. कुआं, तालाब या पेड़ एक बार छोड़कर कोई जाता हैं तो अपना हक भी गवां देता है. अब यह घर मेरा है. बेकार में मुझे तंग मत करो”.

चिड़े ने कहा - “ऐसे बहस करने से कुछ हासिल नहीं होने वाला. किसी धर्मपण्डित के पास चलते हैं. वह जिसके हक में फैसला सुनायेगा उसे घर मिल जाएगा”.

उस पेड़ के पास से एक नदी बहती थी. वहां पर एक बड़ी सी बिल्ली बैठी थी. वह कुछ धर्मपाठ करती नजर आ रही थी. वैसे तो यह बिल्ली इन दोनों की जन्मजात शत्रु है लेकिन वहां और कोई भी नहीं था इसलिए उन दोनों ने उसके पास जाना और उससे न्याय लेना ही उचित समझा. सावधानी बरतते हुए बिल्ली के पास जा कर उन्होंने अपनी समस्या बताई.

बहुत से पाठकों ने हमें यह कहानी पूरी करके भेजी है. उनमें से कुछ को हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं -

कु. कविता कोरी व्दारा पूरी की गई कहानी

सावधानी बरतते हुए बिल्ली के पास जा कर उन्होंने अपनी समस्या बताई. उन्होंने कहा, 'हमने अपनी उलझन तो बता दी, अब इसका हल क्या है ? जो भी सही होगा उसे वह घोंसला मिल जाएगा और जो झूठा होगा उसे आप खा लें.'

यह तुम कैसी बातें कर रहे हो. हिंसा जैसा पाप इस दुनिया में नहीं है. मैं तुम्हें न्याय देने में तो मदद करूंगी लेकिन झूठे को खाने की बात है तो वह मुझसे नहीं हो पाएगा. मैं एक बात तुम लोगों को कान में कहना चाहती हूं. जरा मेरे करीब आओ तो !!'

खरगोश और चिड़ा खुश हो गए कि अब फैसला हो कर रहेगा, और उसके बिलकुल करीब गए. फिर क्या था ? करीब आए खरगोश को पंजे में पकड़ कर मुंह से चिड़े को बिल्ली ने नोंच लिया. दोनों का काम तमाम कर दिया. अपने शत्रु को पहचानते हुए भी उस पर विश्वास करने से खरगोश और चिड़े को अपनी जान गवांनी पड़ी.

शिक्षा - सच है, शत्रु से संभलकर दूर ही रहने में भलाई है.

कु. राजेश्वरी मरपच्ची व्दारा पूरी की गई कहानी

सावधानी बरतते हुए बिल्ली के पास जाकर उन्होंने अपनी समस्या बताई. बिल्ली ने उन दोनों की बातें ध्यान से सुनी फिर फैसला किया कि यह घर चिड़ा का होना चाहिए, क्योंकि उसने मेहनत करके खून-पसीने से यह घोंसला बनाया था. कुछ दिनों के लिए भोजन की तलाश में अन्यत्र चला गया था. जिस पर खरगोश आकर जबरदस्ती कब्जा कर लिया था. खरगोश तो पेड़ के नीचे भी रह सकता है. इस तरह से चिड़ा और खरगोश ने बिल्ली के चतुराई भरे निर्णय को मान लिया और तीनों में दोस्ती हो गई. अब घोंसले में चिड़ा, पेड़ में बिल्ली और पेड़ के नीचे बिल में खरगोश रहने लगा.

देवेन्द्र कुमार आर्मो व्दारा पूरी की गई कहानी

सावधानी बरतते हुए बिल्ली के पास जाकर उन्होंने अपनी समस्या बताई. बिल्ली ने उन दोनों की बात चुपचाप सुनी, फिर मौका देख कर खरगोश के पास गयी और खरगोश को झपट्टा मारकर मार डाला. यह देखकर चिढ़ा उड़ने लगा तो बिल्ली ने उछाल भरते हुए अपने पंजे में चिड़े को दबोच लिया. उन दोनों को बिल्ली ने खा लिया और घोसले पर स्वयं ही कब्जा कर लिया.
शिक्षा- दुश्मन पर कभी भी विश्वास नहीं करना चाहिए.

<u>अगले अंक के लिये अधूरी कहानी</u>

<u>वह लड़की</u>

लेखिका - रामेश्वरी चंद्राकर, पी.जी. उमाठे कन्या विद्यालय

एक लड़की थी. उसका पढ़ाई में बहुत मन लगता था पर उसके पापा उसे काम पर भेजते थे. जब वो बोलती थी की मुझे स्कूल जाना है तो उसके पाप कहते थे कि स्कूल नहीं काम पर जाओ. जब उस लड़की ने अपने पापा की बात नहीं मानी और पढ़ने के लिये स्कूल चली गई तो उसके पापा उस लड़की के स्कूल गये और उसकी सहेलियों से कहने लगे की तुम लोगों ने ही इसे बिगाड़ा है. इसके बाद उसके पापा ने उसे स्कूल नहीं जाने दिया बल्कि किसी के घर कम पर भेज दिया. एक दिन उस लड़की की तबीयत ख़राब हो गयी और वह काम पर नहीं गयी. उसके पापा ने उससे पूछा की तुम काम पर क्यों नहीं गयी? उस लड़की ने कहा कि मेरी तबियत ख़राब है इसीलिए मैं काम पर नहीं गयी. यह सुनकर उस लड़की के पापा उसे बहुत मारा.

अब आप इस कहानी को पूरा करके हमें dr.alokshukla@gmail.com पर भेज दीजिये. अच्छी कहानियां हम अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

चित्र देखकर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको कहानी लिखने के लिये यह चित्र दिया था -

इस चित्र पर हमें अनेक कहानियां प्राप्त हुई हैं. उनमें से कुछ अच्छी कहानियां हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं -

सच्चा मित्र

लेखिका - कु. कविता कोरी

दो दोस्त (Friend) सत्य और स्वयं एक घने जंगल (Jungle) से होकर कहीं जा रहे थे. दोनों काफ़ी गहरे दोस्त (Best friend) थे और अपनी दोस्ती (Friendship) को लेकर दोनों ही बातें करते हुए जा रहे थे. Jungle बहुत (Very)

ही घना था. सत्य डर रहा था, लेकिन स्वयं ने कहा कि मेरे होते हुए तुम्हें डरने की कोई ज़रूरत नहीं. मैं तुम्हारा (Your) सच्चा (True) और अच्छा (Good) friend हूं. इतने में ही सामने (Front) से ही बहुत ही बड़ा (Big) भालू (bear) उन्हें नज़र आया. स्वयं bear को देखते ही भाग खड़ा हुआ. सत्य कहता रहा कि मुझे छोड़कर मत भागो, लेकिन वो भागते हुए एक पेड़ (Tree) पर चढ़ गया. यह देख सत्य और भी डर गया, क्योंकि वो tree पर चढ़ना नहीं जानता था. इतने में वो bear और भी नज़दीक आ गया था. जब वो बेहद क़रीब आने लगा, तो सत्य के पास कोई चारा नहीं रहा और वो वहीं नीचे ज़मीन (Ground) पर आंखें बंद करके लेट गया. Tree पर चढ़ा स्वयं यह सारा नज़ारा देख रहा था और वो सोचने लगा कि ऐसे तो यह मर जाएगा. इतने में ही वो bear नीचे लेटे सत्य के क़रीब आकर उसे देखने लगा, उसे सूंघा और उसके शरीर (Body) का पूरी तरह मुआयना (Inspection) करके आगे बढ़ गया. Ground पर लेटे सत्य ने राहत की सांस ली और वो सोचने लगा कि अच्छा हुआ जो मैंने सांस (Breath) रोक ली थी, क्योंकि bear मरा हुए शरीर (dead bodies) को नहीं खाते और वो bear मुझे मरा (Dead) हुआ जानकर आगे बढ़ गया. Tree पर चढ़ा स्वयं बहुत हैरान (Astonished) था। Bear के जाने के बाद वो नीचे उतरा और उसने अपने सत्य से पूछा कि आख़िर उसने क्या किया था और वो bear उसके कान (Ear) में क्या कह रहा था? Dead body होने का नाटक कर रहे सत्य ने कहा कि bear ने मेरे ear में कहा कि बुरे समय (bad time) में ही सही दोस्तों (True friends) की पहचान होती है, इसलिए कभी भी ऐसे friends के साथ मत रहो, जो Bad times में तुम्हें अकेले (Alone) छोड़कर भाग जाएं और जो वक़्त (Time) पर काम ही न आएं. स्वयं को समझते देर न लगी और फिर दोनों आगे बढ़ गए.

सीख - सच्चा दोस्त वही होता है, जो बुरे से बुरे वक़्त में भी अपने मित्र का साथ नहीं छोड़ता और मुसीबत के समय अपने मित्र की मदद करता है.

<u>मतलबी दोस्त</u>

लेखक - श्रीकांत सिंह

बहुत पुरानी बात है. जंगलों के बीच बसा एक गाँव था गढ़कटरा. गाँव में पहुँचने के लिये कोई पक्की सड़क नहीं थी. लोग जंगल के पगडंडी रास्ते से शहर के लिये सफर करते थे. इसी गाँव में दो अच्छे दोस्त थे साहिल और शशांक.

एक दिन दोनों जंगल के रास्ते शहर जा रहे थे. अचानक उनके रास्ते में भालू आ गया. साहिल दौड़ा और पास के पेड़ में चढ़ गया. शशांक को पेड़ पर चढ़ना नहीं आता था, पर उसने दिमाग लगाया. वह आंखें बंदकर और साँस रोककर ज़मीन पर लेट गया. भालू पास आया और सूंघ कर चला गया.

जब भालू चला गया तो साहिल पेड़ से उतरकर शशांक के पास आया. उसने शशांक से पूछा कि "भालू ने तुम्हारे कान में क्या कहा?" शशांक ने उत्तर दिया - "भालू ने तुम जैसे मतलबी दोस्तों से दूर रहने को कहा."

<u>बुध्दिमान बालक</u>

लेखक - भगवान सिंह, कक्षा सातवीं, नवापारा कर्रा

एक गांव में चैतू नाम का एक बालक रहता था. उसकी मां बहुत बीमार थी. चैतू दिन-रात कड़ी मेहनत करता था और अपना घर संभालता था. वह उसी गांव के मुखिया के यहां काम करता था. गांव और शहर के बीचो-बीच एक जंगल पड़ता था. उसी जंगल में लोमड़ी, भालू आदि कई जानवर रहते थे. एक दिन चैतू की मां को बहुत बुखार था. चैतू अपने मालिक के पास जाकर ₹1000 मांगा. मालिक ने

पूछा तुम इतने रुपयों का क्या करोगे ? चैतू ने कहा - ‘मालिक मेरी मां बहुत बीमार है. मुझे मां के इलाज के लिए रुपयों की जरूरत है.’ मालिक ने उसे रुपये देकर कहा - ‘तुम अकेले कैसे शहर जाओगे ? रास्ते में तो जंगल पड़ता है. एक काम करो मेरे बेटे राम सिंह के साथ चले जाओ.’

चैतू और रामसिंह शहर से डॉक्टर को बुलाने गए. दोनों बहुत दूर चलते रहे. दोनों को दूर से भालू आता नजर आया. दोनों सोचने लगे क्या करें? राम सिंह ने कहा चलो जल्दी किसी पेड़ पर चढ़ जाते हैं. रामसिंह जल्दी पेड़ पर चढ़ गया, पर चैतु को पेड़ पर चढ़ना नहीं आता था. चैतू को एक उपाय सुझा. वह झट से लेट गया और उसने अपनी सांस रोक ली. भालू आ गया. उसने चैतू को देखा और उसे मरा समझ कर भालू चला गया. चैतू डॉक्टर साहब को लेकर गांव पहुंचा. उसने अपनी मां की इलाज कराया. चैतु की मां कुछ ही दिन में ठीक हो गई.

मूर्ख भालू

लेखिका - कु. प्रमिला, कक्षा सातवीं, नवापारा कर्रा

एक बार राम अपने दोस्तों के साथ जंगल घूमने गया था. उसने कई प्रकार के पशु-पक्षी देखे. उन लोगों ने खूब मस्ती की. एक सुबह सभी दोस्त स्कूल जा रहे थे. तब उन्होंने एक भालू को देखा. एक मदारी उस भालू को खेल दिखाने के लिए लाया था. सभी खेल देखने के बाद स्कूल चले गए. शाम को राम खाना खाकर जल्दी सो गया. उसने सपना देखा कि वह अपने दोस्त के साथ जंगल घूमने जा रहा था, तो एक भालू अचानक उनके सामने आ गया. उसका दोस्त पास के ही पेड़ पर चढ़ गया, परन्तु राम पेड़ पर चढ़ नहीं पाया. अपनी जान बचाने के लिए वह ज़मीन पर लेट गया और कुछ देर के लिए उसने अपनी सांस रोक ली. भालू ने राम के करीब जाकर उसे सूंघा तो उसे लगा कि राम मर गया है. भालू राम को

छोड़कर वहां से चला गया. भालू के जाने के बाद दोनों दोस्त खुशी-खुशी अपने घर वापस आ गए.

इससे हमें यह शिक्षा मिलती है कि कठिनाइयों से डरना नहीं चाहिए और उनका डटकर मुकाबला करना चाहिए.

<u>धोखेबाज दोस्त</u>

लेखक - घनश्याम सिंह

एक गांव में नरेंद्र और मोहन नाम के दो दोस्त रहते थे. वे दोनों एक दूसरे के लिए जान भी देने को तैयार रहते थे. नरेंद्र बहुत समझदार था और कक्षा में बहुत होशियार था. मोहन पढ़ाई में कमजोर था, इसलिए उसे अंदर ही अंदर नरेंद्र से ईर्ष्या होती थी.

एक बार स्कूल की छुट्टी हो जाने पर दोनों जंगल घूमने गए. जंगल के रास्ते उन्हें एक गुफा दिखाई पड़ी. भालू की आवाज सुनकर दोनों भागे. मोहन ने सोचा कि यह अच्छा अवसर है कि नरेंद्र को भालू खा ले. वह जल्दी से पेड़ पर चढ़ गया परंतु नरेंद्र पेड़ पर नहीं चढ़ पाया. वह बुध्दिमान था. उसने अपनी बुध्दि से उपाय सोचा और जमीन पर सांस रोक कर लेट गया. भालू नजदीक आया तो उसने नरेंद्र को मरा हुआ समझा. भालू पेड़ चलने में माहिर होता है. उसने पेड़ पर मोहन को देखा तो वह भी पेड़ पर चढ़ गया. जब वह मोहन के पास पहुंचा तो मोहन डर के मारे नीचे गिर गया. उसे चोट लगी. यह देखकर नरेंद्र अपने दोस्त के पास गया और उसे उठाया. फिर दोनों जल्दी से जंगल से बाहर भाग आए. नरेंद्र ने मोहन की जान बचाई. मोहन को अपनी धोखेबाजी और ईर्ष्या पर बहुत पछतावा हुआ.

शिक्षा- हमें दोस्ती में धोखेबाजी नहीं करना चाहिए.

दो मित्र

लेखक - मनोज कश्यप स. शिक्षक मुंगेली

रामू और श्यामू नाम के दो मित्र थे. दोनो में बहुत ही गहरी मित्रता थी. एक दिन की बात है दोनो मित्र जंगल घूमने गए. दोनों खूब मस्ती कर रहे थे, तभी अचानक एक भालू दिखा. रामू डर के मारे झट से पेड़ पर चढ़ गया किन्तु श्यामू पेड़ पर नही चढ़ पाया क्योकि उसको पेड़ चढ़ना नही आता था. फिर रामू को तरकीब सूझी और अपने मित्र श्यामू को कहा कि झट से वही जमीन पर लेट जाओ और साँसे रोक दो. इतने में भालू श्यामू के पास आकर खड़ा हो गया. श्यामू को तो बहुत डर लग रहा था, तथा डर के कारण साँस ऊपर नीचे हो रही थीं. वह मन ही मन सोच रहा था कि वह आज जीवित नही बच पायेगा. भालू उसे निश्चित ही मार डालेगा. डर ही डर में अपनी पूरी साँसे रोककर लेटा ही रहा. तभी भालू उसके समीप आकर के सूँघकर देखने लगा. फिर भालू को लगा कि यह तो मर चुका है और भालू आगे की ओर चला गया. भालू के चले जाने पर रामू झट से उतरकर आया और उसने अपने मित्र को उठाकर गले से लगा लिया. इस प्रकार रामू ने अपनी सूझ-बूझ से अपने मित्र की जान बचा ली.

<u>अगले अंक की चित्र कहानी के लिये चित्र</u>

नीचे दिये चित्र को देखकर जल्दी से एक कहानी लिखो और हमें dr.alokshukla@gmail.com पर भेज दो. अच्छी कहानियां हम अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

<u>**बच्चो के चित्र**</u>

हमें इस अंक के लिये बाल कलाकारों के बनाए हुए बड़े सुंदर चित्र प्राप्त हुए हैं. उनमें से कुछ हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं.

<u>**बृजेश लहरे जी के विद्यार्थियों व्दारा बनाए गए चित्र**</u>

<u>**चित्रकार - पूनम सिदार**</u>

<u>**चित्रकार - उमाशंकर पोबिया**</u>

मनोज कश्यप जी के विद्यार्थियों व्दारा बनाए चित्र

चित्रकार - भारती निषाद

चित्रकार - पूजा कश्यप

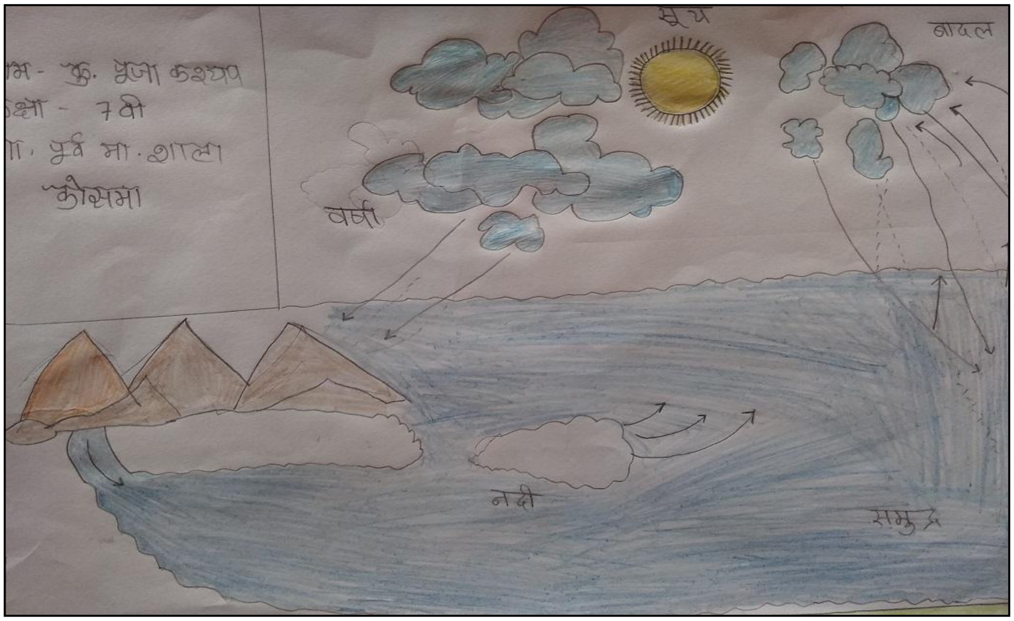

चित्रकार - पूजा साहू

चित्रकार - भारती यादव

<u>मुंगली से मनोज कुमार कोशले जी की छात्रओं की बनाई रंगोली का चित्र</u>

<u>रंगोली बनाने वाल छात्राएं रुखमनी, पिंकी एवं अन्य</u>

<u>बाल कामिक्स</u>

हम इस अंक में बाल कामिक्स के प्रयोग को आगे बढ़ाते हुए श्री अशोक कुमार राठिया, सहायक शिक्षक, शा. प्रा.शा. डोंगदरहा, संकुल - भैसमा, विकासखंड- कोरबा के भेजे हुए उनके विद्यार्थियों के बनाए बाल कामिक्स नीचे प्रकाशित कर रहे हैं -

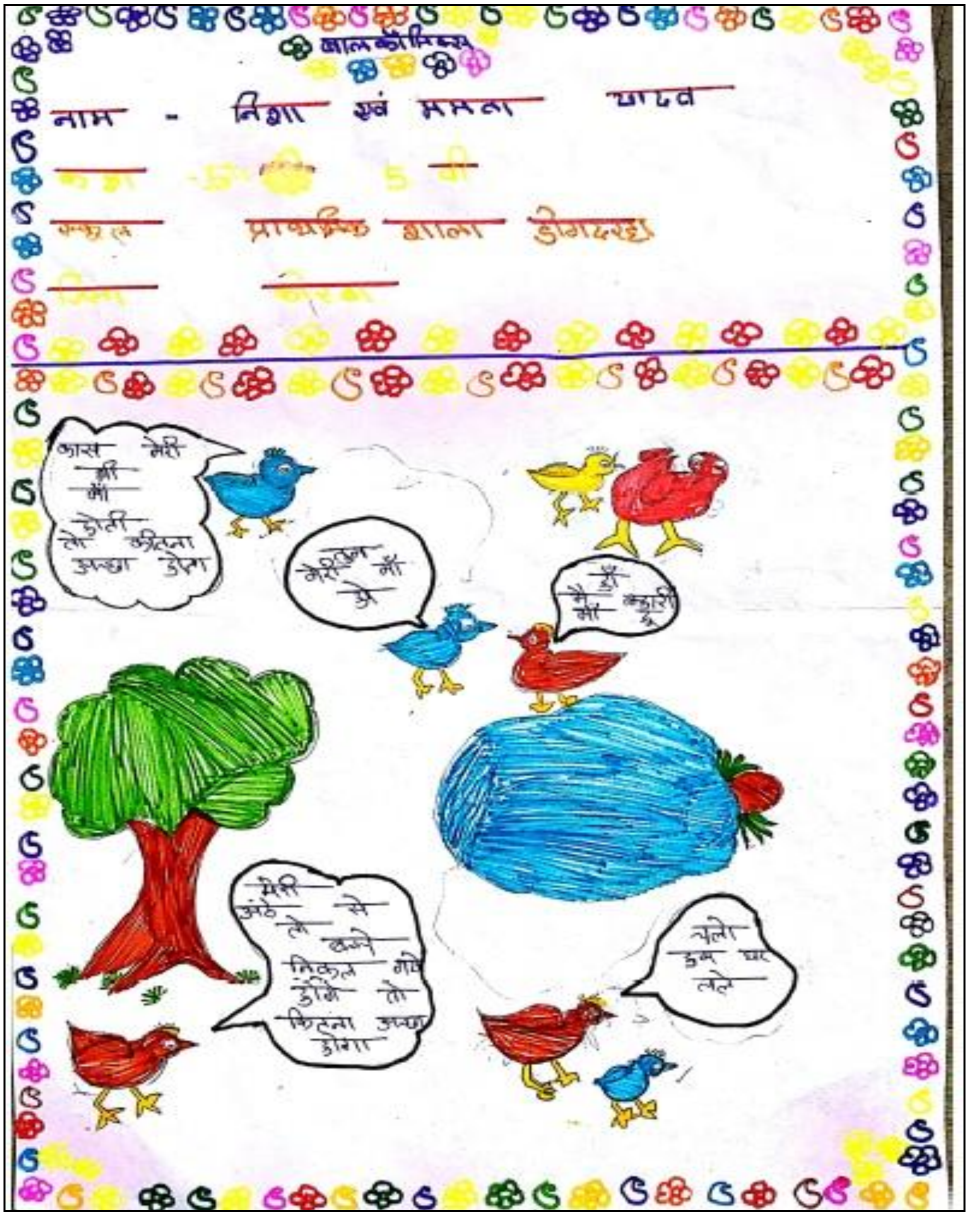

नाम - मनोज एवं रूपेश यादव
स्कूल - प्राथमिक शाला
जिला - कोरबा
School

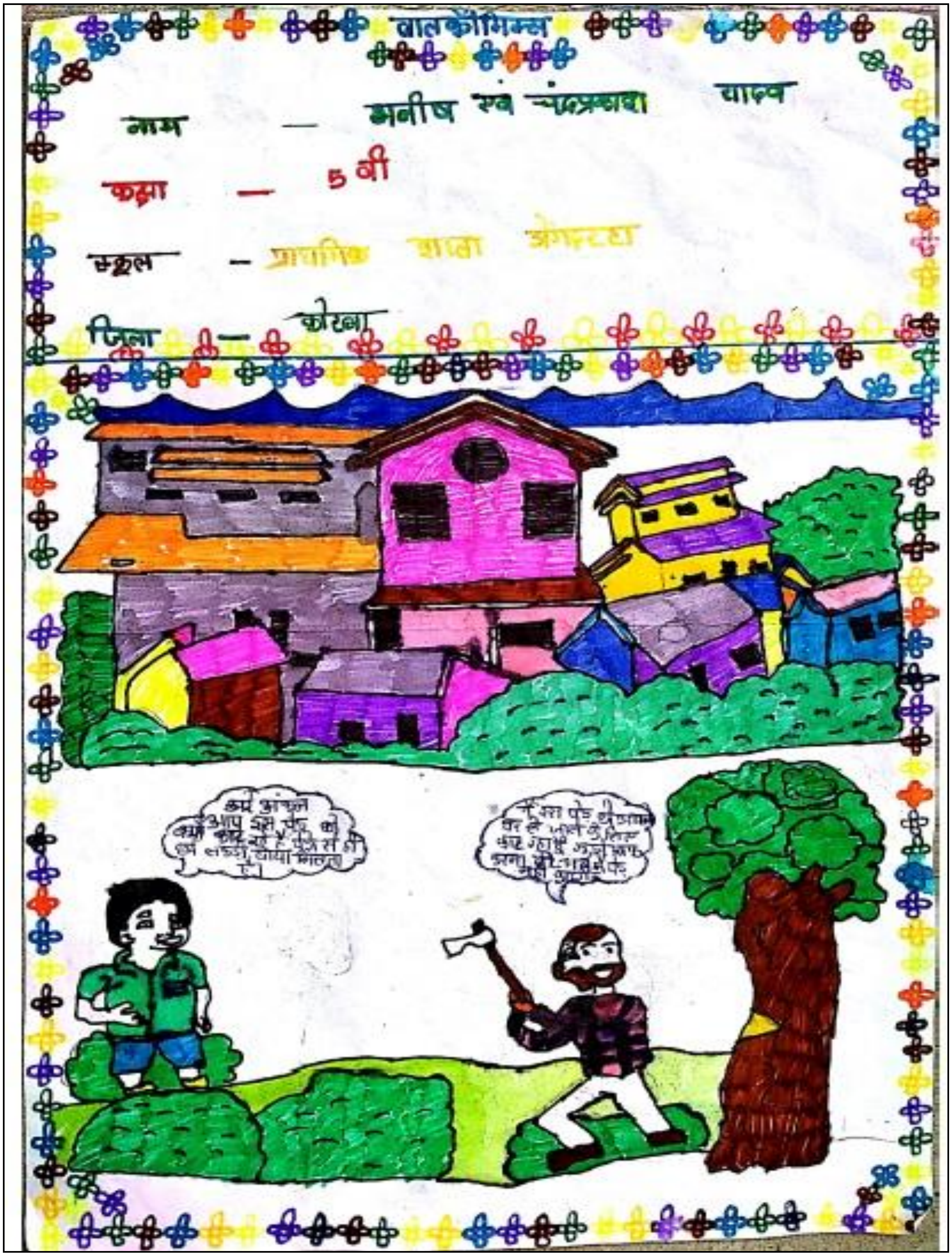
बालकॉमिक्स
नाम — मनीष एवं चंद्रप्रभा यादव
कक्षा — 5 वीं
स्कूल — प्राथमिक शाला
जिला — कोरबा

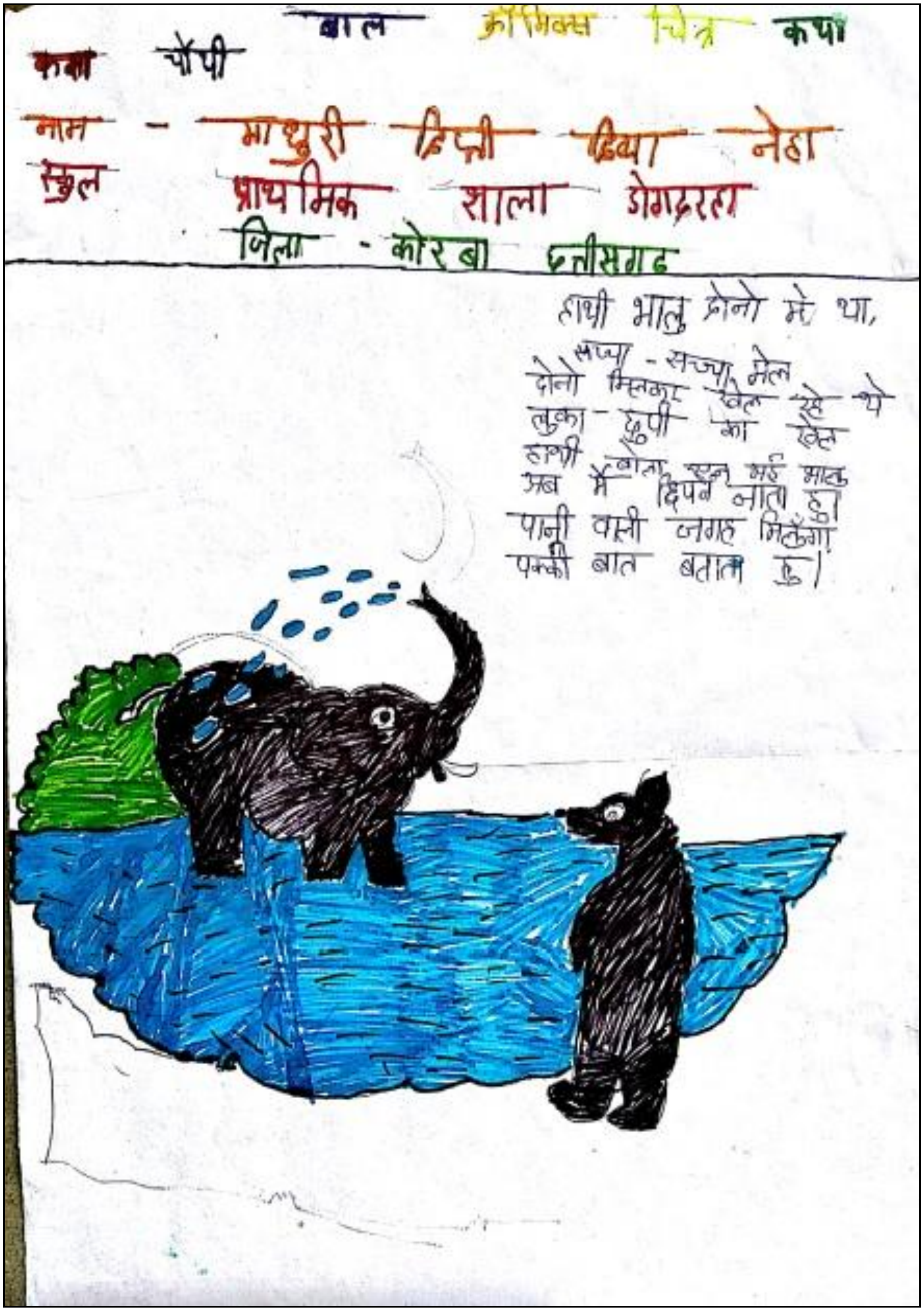

बाल कॉमिक्स चित्र कथा
कक्षा चौथी
नाम - माधुरी दिप्ती दिव्या नेहा
स्कूल प्राथमिक शाला डोंगदरहा
जिला - कोरबा छत्तीसगढ़
हाथी भालु दोनो मे था,
सच्चा - सच्चा मेल
दोनो मिलकर खेल रहे थे
लुका - छुपी का खेल
हाथी बोला सुन भई भालु
अब मैं छिपने जाता हूं
पानी वली जगह मिलूंगा
पक्की बात बताता हूं।

बाल कॉमिक्स चित्र कथा

कक्षा - चौथी

नाम - मंजुषा कोशी कुमकुम

स्कूल - प्राथमिक शाला डोंगदरहा

जिला - कोरबा

तितली रानी तितली रानी

रंग-बिरंगे पंखो वाली।

फूल-फूल पेड़ घूम रही है।

देखो होकर है मतवाली।

मछली जल की रानी है

जीवन उसका पानी है

हाथ लगाओगी तो डर जाएगी

बाहर निकालो तो मर जाएगी

पानी मे डालो तो तैर जाएगी

नाम - रितिका
कक्षा - 1ली
हा..हा..
मैं पेड को खांऊगा
मुझे मत मारो

Animals

Author - Sewati Chakradhari

Lion, Lion where are you?

Tiger, Tiger how do you do?

Elephant, Elephant, move your trunk.

Deer, Deer, Jump, Jump, Jump.

Oh My Dear

Author - Dilkesh Madhukar

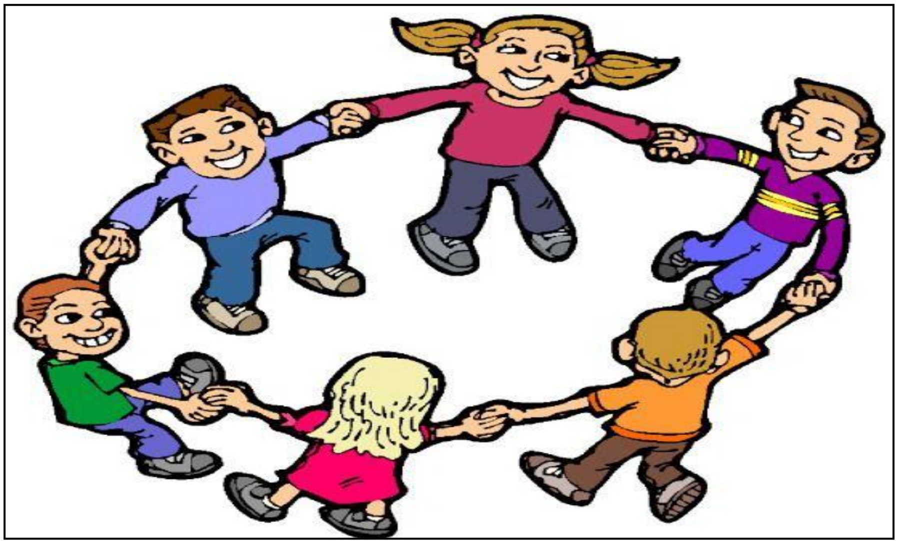

Oh my dear,
Look, look there.
One, two, three, four,
Big - big bear.
Oh my dear,
Sit -sit near.
Five, six, seven,
Eat -eat pear.
Oh my dear,
Come -come here.
Eight, nine, ten,
Go -go dear.
Oh my dear,
Look and hear.
Jump -jump- jump,
Show some cheer.

Moon and Sun

Author - Parul Singh

Sun is waking
In the morning
Moon is running
In the night
Stars are twinkling
Light and bright...

कुहू-कुहू

लेखिका - सेवती चक्रधारी

कुहू-कुहू कोयल है गाती,
सबको मीठे राग सुनाती.
कौआ कहता कांव-कांव,
तुम भी आना मेरे गांव.
कहे कबूतर गुटुर-गुटुर गूं,
चलो खेलते, छुपा-छुपा छू.
टांय-टांय तोता कहता है,
लाल-हरी मिर्ची खाता है.
चीं-चीं-चीं चिड़िया है चहकी,
सुबह हो गई सबको कहती.

<u>स्वतंत्रता दिवस</u>

लेखिका - सुचिता साहू

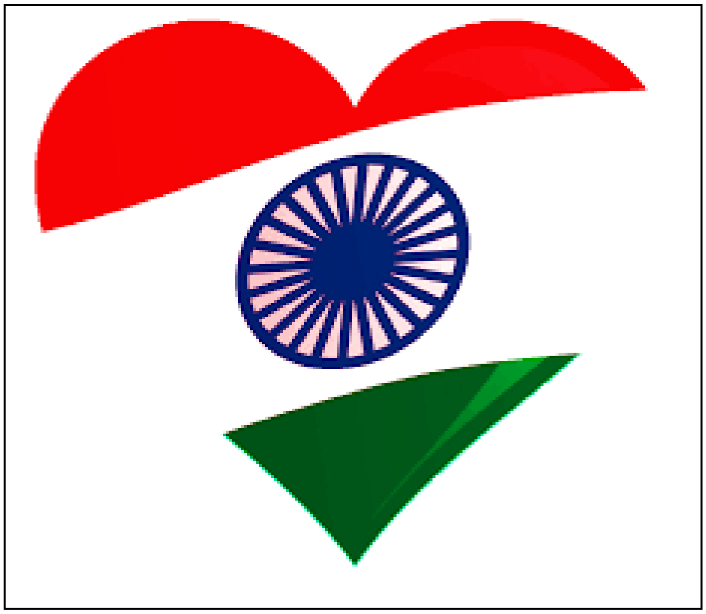

छोड़ हिंसा को, अहिंसा को अपनाकर हमे दिखाना है,
बापू के आदर्शों पे चल के हमें बताना है,
नई सदी के लोग हैं हम, कुछ करके हमें दिखाना है,
मिलकर हम सबको प्यारा हिन्दुस्तान बनाना है.

शिक्षित यदि पूरा समाज हो जाये, तो यह देश आगे बढ़ जाये,
देश का हर बच्चा फिर बन पायेगा गांधी और सुभाष,
शिक्षा की इस ज्योति को घर-घर में हमें जलाना है,
मिलकर हम सबको प्यारा हिन्दुस्तान बनाना है.

डूबती हुई सभ्यता संस्कृति जो, उसको हमें बचाना है,
मिलकर हम सबको प्यारा हिन्दुस्तान बनाना है,
सो चुके इस समाज को फिर से हमें जगाना है,
मिलकर हम सबको प्यारा हिन्दुस्तान बनाना है.

निकल रहा है सूरज

लेखक - अजय कुमार, कक्षा-8, पूर्व माध्यमिक विद्यालय, गनेशपुर ग्रंट,
इटियाथोक, गोंडा उप्र, प्रेषक विकास पचौरी

उठो बच्चों आंखे खोलो निकल रहा है सूरज।
जल्दी से तैयार हो लो, निकल रहा है सूरज।।

दादी हमको रोज जगाती।
हमको अच्छी बात सिखाती।
प्यारे बच्चे अब मत सो, निकल रहा है सूरज।।
उठो बच्चो, आंखे खोलो निकल रहा है सूरज।।

सितारे देखो भाग रहे हैं।
फूल भी देखो खिल रहे हैं।
चिड़ियां भी उड़ चलीं है, निकल रहा है सूरज।।
उठो बच्चो, आंखे खोलो निकल रहा है सूरज।।

रामू उठ गया, श्यामू उठ गया, राधा चली नहाने।
मम्मी उठकर देखो भैया, बैठी हैं नाश्ता बनाने।।
मंदिर में बजीं घंटियां, निकल रहा है सूरज।।
उठो बच्चों आंखे खोलो निकल रहा है सूरज।।

बरगद दादा छांव देते, पीपल जी लहराते पत्ते।
भौंरे सुना रहे मधुर गान, निकल रहा है सूरज।।
उठो बच्चो, आंखे खोलो निकल रहा है सूरज।।

बिटिया सुनो अब करो पढ़ाई

लेखिका - जागृति मिश्रा 'रानी'

बिटिया सुनो अब करो पढ़ाई,
तभी करेंगे सभी बड़ाई।

प्यार खूब सब करेंगे तुमसे,
नहीं करेगा कोई ढिठाई।

नाना नानी घर आएंगे,
देंगे तुमको खूब मिठाई ।

प्यारी तू दादी की गुड़िया,
आंख तुम्हें न कभी दिखाई।

मां ले लेगी सारी बलाएं,
ममता ने यह रीत चलाई।

<u>समय - चक्र</u>

लेखक - रघुवंश मिश्रा

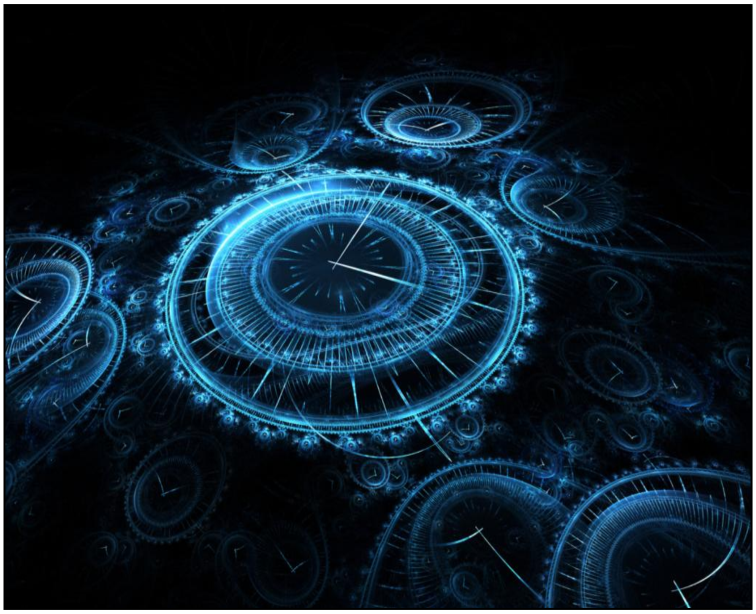

सेकण्ड से मिनट,
मिनट से घंटे बनते हैं,
चैबीस घंटे के दिन-रात,
सात दिन में सप्ताह बदलते हैं.

सोम, मंगल, बुध, गुरु,
शुक्र, शनि, रवि हैं दिनों के नाम,
जिसमें रहकर करते हैं,
सारे लोग अपने काम.

तीस, इकतीस दिन के महीने,
बारह महीनो से बनता साल,
सेकण्ड, मिनट और घंटो से,
बना है यह समय जाल.

तीन सौ पैसठ के बदले,
तीन सौ छैःसठ जब हो जाता है,
बढ़े हुए दिन से,
चौथा अधिवर्ष कहलाता हैं.

लोग कह गए,
बात यह अतिसुन्दर,
पूरा कर लो आपने काम,
समय चक्र के अंदर.

<u>स्वतंत्रता मुझे भी चाहिए</u>

लेखक - द्रोण साहू

मैं अपने मन से कुछ भी न करूँ,
तुम हमेशा चाहते हो मुझे समझाना।
जैसे पिंजरे में बंद किसी तोते को,
दे दो खाने को थोड़ा सा दाना।

क्लास में यह मत करो, वह मत करो,
तो क्या कछुए की तरह है रहना।
डरावनी डाँट और नीरस बातें,
गधे की तरह सब कुछ है सहना।

क्लास से बाहर तुम्हारे आदेश बिना,
कोई नहीं आएगा, नहीं जाएगा।
दाखिले के वक्त काश पता होता,
मुझ पर कोई इतनी बंदिशें लगाएगा।

कुछ तुम सीखो, कुछ हम सीखें,
शायद यही तो है पढ़ना-पढ़ाना।
पर तुम तो हम पर थोप -थोपकर,
कहते हो ऐसे ही है आगे जाना।

सीखने दो मुझे अपने तरीके से,
सीखकर है तुम्हें ही दिखाना।
पर तुम तो पीछे पड़े हो हाथ धोकर,
जैसे ठेका है तुम्हारा मुझे सिखाना।

आई बरसात

लेखक - प्रकाश किरण कटेन्द्र

हवा चली जब सर्र-सर्र,

काले-काले बादल छाए,

बूंदों की सवारी लाए।

बूंद पड़ी जब टप-टप,

बच्चे खेले छप-छप,

पानी भरा है गांव गली,

बच्चों की अब नाव चली।

धरती दिखती हरी भरी,

लगती सबको सोनपरी,

निकले छाता रेनकोट,

कीचड़ में सब लोटपोट।

जुगनुओं की सजी बारात

खुशी मनाओ आई बरसात

<u>मशरूम की छतरी</u>

लेखक - गोपाल कौशल

देख नन्हीं चिडिया

को बरसात में भीगते

फुदक फुदककर

मेंढक गया लेने

मशरुम की छतरी ।

देखकर मेंढक का

यह आईडिया

चिडियां हो गई खुश

मेंढक को कहा उसने

धन्यवाद भैया ।।

<u>महूँ पढे जातें</u>

लेखक - अजहरुद्दीन अंसारी (अजहर)

दाई ओ महूँ पढे जातें, ददा गा महूँ पढे जातें,
पढ लिख के जिनगी ल गढे जातें ओ,
दाई ओ महूँ पढे जातें, ददा गा महूँ पढे जातें,
बिहनिया चराहूँ बइला गोरु ,संझा चराहूँ छेरी,
रोज जुअरहा इस्कुल जाहूँ नई करव अलढेरी,
जुग हवे विकास के महूँ बढे जातें,
दाई ओ महूँ पढे जातें, ददा गा महूँ पढे जातें,
पार परोसी संगी साथी जम्मो पढे जाथे,
नावा नावा आनी बानी के बात ल बताथे,
कइथें , सीढी लगे हे सरगे ओमा महूँ चढे जातें,
दाई ओ महूँ पढे जातें, ददा गा महूँ पढे जातें,
देख तो गा सहरीया टूरा कम्प्यूटर चलाथे,
झूला असन कुर्सी म बईठे बटन ल दबाथे,
मोरो मन ह करथे महूँ नोकरी पातें,
दाई ओ महूँ पढे जातें, ददा गा महूँ पढे जातें.

<u>गिनती</u>

लेखिका - प्रतिभा पांडेय

एक, दो, तीन
तीन, तीन, तीन
कचरा ल बीन,
बीन, बीन, बीन

चार, पांच, छः
छः, छः, छः
कचरा झन फेक
कचरा झन फेक

सात, आठ, नव
नव, नव, नव
बीजा ल बोव
बोव, बोव, बोव

दस, दस, दस
दस, दस, दस
पेड़ लगाओ बस

<u>फुगड़ी गीत</u>

संकलन- दीपक कुमार कंवर

गोबर दे बछरू गोबर दे

चारो कोठा ल लीपन दे

राजा राम के पूतरी

खेलन भाई फूगड़ी

छेना बीने गएन ता

एक बुंदेला पाएन ता

ममा ल बताएन ता

ममा दीहिस गुदे गुदा

हमला दीहिस फोकला

फोकला ला का करबो

रही जाबो तिजा

तिजा के बिहान दिन

रंग-रंग के लुगरा

खोल दे रे भउजी कपाट के खीला

एक गोड़ मा लाली भाजी, एक गोड़ मा कपूर

कतेक ला मानो मै देवर ससूर

भइया गेहे नगर म भौजी टंगे बादर म

भौजी के पयरी बाजे रायपुर ले सुनावत हे

फुगड़ी रे फांफा फुगड़ी रे फुगड़ी रे ....

हमर छत्तीसगढिय़ा खेल

लेखिका - संतोषी साय

चलव संगी खेलबो, हमर छत्तीसगढ़िया खेल

किसम-किसम के खेल रे संगी,

जेला सबे भुलाय।

खेलबो संगी बांटी,

जेकर ले सीखे गिनती,

भोटकुल अउ कुड़हिल घलो खेल के,

सम-विषम ल सीखबो ।

कबड्डी हमर राजकीय खेल आय,

जेला नइ जाने त काय पाय,

फुगड़ी के गाना म अउ

सुआ के हाना म,

रिस्ता-नाता,तीज-तिहार अउ

धरम-करम समाय।

अटकन-बटकन ल जाने त,

जिनगी के पार ल पाय।

भौंरा, गुलेल अउ डण्डा पचरंगा,

जाने कति नंदाय,

अब के मुबाइल के गेम ल देखय त

बबा मन खखवाय,

चलव संगी खेलबो,

हमर छत्तीसगढ़िया खेल,

किसम-किसम के खेल रे संगी

जेला सबे भुलाय।

<u>सामान्य ज्ञान - हमारा विलुप्त होता लोकपर्व भोजली</u>

लेखिका - श्रीमती प्रतिभा पांडेय

अगस्त के महीने में छत्तीसगढ़ में एक प्रमुख लोकपर्व मनाया जाता है जिसका नाम है - 'भोजली'. इसे किंजलिया, भुजरिया आदि कई नामो से भी जाना जाता है.

सावन महीने की सप्तमी को छोटी-छोटी टोकरियों में मिट्टी डालकर उनमें अन्न के दाने बोए जाते हैं. जिस टोकरी या गमले में ये दाने बोए जाते हैं उसे घर के किसी पवित्र स्थान में छायादार जगह में स्थापित किया जाता है. उनमें

रोज़ पानी दिया जाता है और देखभाल की जाती है. दाने पौधे बनकर बढ़ते हैं. महिलायें उसकी पूजा करती हैं एवं जिस प्रकार देवी के सम्मान में देवी-गीतों को गाकर जवांरा- जस - सेवा गीत गाया जाता है वैसे ही भोजली दाई (देवी) के सम्मान में भोजली सेवा गीत गाये जाते हैं. सामूहिक स्वर में गाये जाने वाले भोजली गीत छत्तीसगढ की शान हैं. खेतों में इस समय धान की बुआई व प्रारंभिक निराई गुडाई का काम समापन की ओर होता है. किसानों की लड़कियाँ अच्छी वर्षा एवं भरपूर भंडार देने वाली फसल की कामना करते हुए फसल के प्रतीकात्मक रूप से भोजली का आयोजन करती हैं.

सावन की पूर्णिमा तक इनमें ४ से ६ इंच तक के पौधे निकल आते हैं. रक्षाबंधन की पूजा में इसको भी पूजा जाता है और धान के कुछ हरे पौधे भाई को दिए जाते हैं या उसके कान में लगाए जाते हैं. भोजली नई फ़सल की प्रतीक होती है. इसे रक्षाबंधन के दूसरे दिन विसर्जित कर दिया जाता है.
तो चलिए सब मिलकर गाते हैं -

देवी गंगा, देवी गंगा,
लहर तुरंगा हो, लहर तुरंगा।

हमरो भोजली दाई के हवाई,
सोने सोन के अंगा।।

हाँ हो----- देवी गंगा।

<u>सामान्य ज्ञान सूरज का परिवार</u>

लेखक - दीपक कुमार कंवर

दूर आकाश मे बहुत से तारों और ग्रहों के परिवार रहा करते थे. इनमें से एक परिवार था सूरज का. उसके आठ बेटे और एक बेटी थी. बेटे थे - बुध, शुक्र, मंगल, बृहस्पति शनि अरूण, वरूण और यम. बेटी थी धरती. सभी अपने पिता की छत्रछाया मे हंसी खुशी रहते एक साथ हंसते-खेलते, घूमते-फिरते थे.

पड़ोसियों से भी उनका अच्छा संबंध था. परंतु कुछ उदण्ड धूमकेतु और पुच्छल बच्चे भी थे जो हमेशा लड़ाई झगड़ा करते रहते थे. लड़को को तो कुछ नहीं कर पाते, पर उनकी बहन धरती को हमेशा तंग करते थे. इससे सब लोग परेशान थे. धरती बहुत ज्यादा परेशान होती थी. वह रोते हुए अपने भाईयों से शिकायत करती

तो उसके भाई उन्हें धमकाकर भगा देते. पर वे नहीं मानते कुछ दिनों मे मौका पाकर फिर तंग करते थे.

धूमकेतु और पुच्छल की उदण्डता से परेशान होकर धरती ने पिता सूरज को सारी बात बताई. सुरज ने ढ़ांढ़स बधाते हुए कहा - 'पुत्री तुम अपनी शक्तियों को पहचानो. अपनी रक्षा स्वंय करोगी तभी वे समझेंगे और तुमसे दूर रहेंगे. धरती ने प्रणाम करके पिता से विदा ली.

धरती ने पिता की सलाह मानते हुए अपने अंदर की हवा और पानी के ताकत को समझा. अब जब भी धूमकेतु और पुच्छल तारे तंग या मारने पीटने आते हैं तो धरती उन्हें मारकर भगा देती है. धरती अपनी ताकत व विश्वास के बल पर जीव-जन्तुओ पेड़-पौधों को भी जीवन देने लगी.

<u>पहेलियां</u>

संकलनकर्ता - द्रोण साहू

1. बच्चो, मेरे पास आओ,
   मैं हूँ कौन मुझे बताओ।
   मछली, मेंढक मेरे अंदर,
   कमल खिलते कितने सुंदर,
   गाँव भर के आऊँ काम,
   तीन अक्षरों का मेरा नाम।
   अब तो मेरा नाम बताओ,
   नहीं पता तो नहाने जाओ।

   उत्तर-तालाब

2. घास खाऊँ हरी-हरी,
   कान मेरे खड़े-खड़े।
   नाम बताओ मेरा तुम,
   और बनो होशियार बड़े।

   उत्तर-खरगोश

3. पंख फैलाकर नाचूँ मैं,
   बादल छाए चारों ओर,
   दो अक्षर का मेरा नाम,
   लोग कहते मुझको.....।

   उत्तर- मोर

संकलनकर्ता - दिलकेश मधुकर

1. कौन व्यक्ति था जो भारत का राष्ट्रपिता कहलाया?
सत्य अहिंसा से भारत की आजादी ले आया।।

उत्तर - महात्मा गांधी

2. जय जवान जय किसान किसका था नारा?
कौन था वह ईमानदार देश का दुलारा?

उत्तर - लाल बहादुर शास्त्री

3. राष्ट्रीय एकता के माने में रह न सका जो मौन।
आजीवन सरदार रहा वह पुरुष था कौन?

उत्तर - सरदार वल्लभ भाई पटेल

4. दृढ़ निश्चय, उर्वर साहस की वह कौन थी भवानी ?
मनु कहो या लक्ष्मी जिसकी हर युग कह रहा कहानी ।

उत्तर - झांसी की रानी लक्ष्मीबाई।

5. बच्चों से प्यार करें, गुलाब रखे हमेशा।
प्रथम प्रधानमंत्री बने, बताओ कौन है ऐसा?

उत्तर - जवाहरलाल नेहरू

छत्तीसगढ़ी पहेलियां

संकलनकर्ता - सभी बच्चे प्राथमिक शाला गढ़कटरा, जन शिक्षा केन्द्र सतरेंगा

प्रेषक- अजय कुमार कोशले, कोरबा

1. ए पार नदी, ओ पार नदी,
   बीच म खोल
   तोर बाप ल बेकचा लीलिस
   तेन बात ल बोल
   उत्तर - कुर्ता

2. एक गुफा के दो रखवाले
   दोनो लम्बे दोनो काले
   उत्तर - मूंछ

3. तीन कोन के तितली
   कोर चीट के निकली
   उत्तर - समोसा

4. कच्चा खाए कंच कुंवारी
पक्का खाए छाली
ए धंधा ल नई जानही
तेहर जाही डूमरपाली
उत्तर - खजूर (छिंद)

5. पत्थर पर पत्थर
पत्थर पर पैसा
बिन पानी के घर बनाए
वह कारीगर कैसा
उत्तर - मकड़ी

6. बचपन हरा, बुढ़ापा लाल
जो भी खाए हो बेहाल
उत्तर - मिर्च

7. हरा घेरा पीला मकान
इसमें रहता काला इंसान
उत्तर - पपीता

8. खुशबू है पर फूल नहीं

जलती है पर ईर्ष्या नहीं

उत्तर - अगरबत्ती

9. आघू ती ले बाजा बाजे

पाछू ती ले नाचा नाचे

उत्तर - गिलहरी

10. एक बहादुर ऐसा वीर

गाने गाकर मारे तीर

उत्तर - मच्छर

चुटकुले

संकलनकर्ता - तनुजा पटेल, कक्षा-6वीं, शास.पू.माध्य.शाला-नगेडी़

बच्चा -माँ आप हमें रोज स्कूल क्यूँ भेजती हो ?
माँ - पढा़ लिखाकर अच्छा इंसान बनाने के लिए बेटा.
बच्चा - लेकिन मास्टरजी तो हमें इंसान बनाने के बजाय रोज मुर्गा बना देते हैं.

संकलनकर्ता - सूरज पटेल, कक्षा-2, शास.प्राथ.शाला-नगेड़ी

टीचर - बताओ तुम्हारा नाम क्या है ? अंग्रेजी में बताना.
स्टूडेंट - एंड कलर पाकेट अंडरवियर.
टीचर - क्या, हिन्दी में बताओ।
स्टूडेंट - औरंगजेब चढ्डा.
टीचर - अच्छा अपने पापा का नाम अंग्रेजी में बोलो.
स्टूडेंट - ब्यूटिफुल रेड अंडरवियर.
टीचर - क्या बकवास है, हिंदी में बताओ.
स्टूडेंट - सुंदर लाल चढ्डा.

<u>कला - प्लास्टिक की चम्मच के फूल</u>

<u>सामग्री</u> -

- प्लास्टिक की चम्मचें, एक रंग की तीन चम्मचों की आवश्यकता होगी.
- सेलो टेप
- हरे और पीले रंग का तार
- प्लासिटक के कप
- लकड़ी की छीलन

<u>विधि</u> - एक रंग की तीनों चम्मचों को अंदर की ओर मुंह करके उनके हैंडल को बांध दें. अब उन्हें रंगीन कागज़ में लपेट कर सेलो टेप से चिपका दें. चम्मचों की बीच पीले रंग का तार लगा दें. इसके बाद हरा तार अलग से लगा दें और चम्मचों को प्लास्टिक के कप में रखकर उनमें लकड़ी की छीलन भर दें. आपके फूल तैयार हो गए.

विज्ञान के खेल - गायब होने वाला चित्र

संकलनकर्ता - आशा उज्जैनी

सामग्री - 1 चम्मच कोबाल्ट क्लोराइड (बाज़ार में रसायन की दुकान से खरीद लें), एक पेंट ब्रश और एक सफेद कागज.

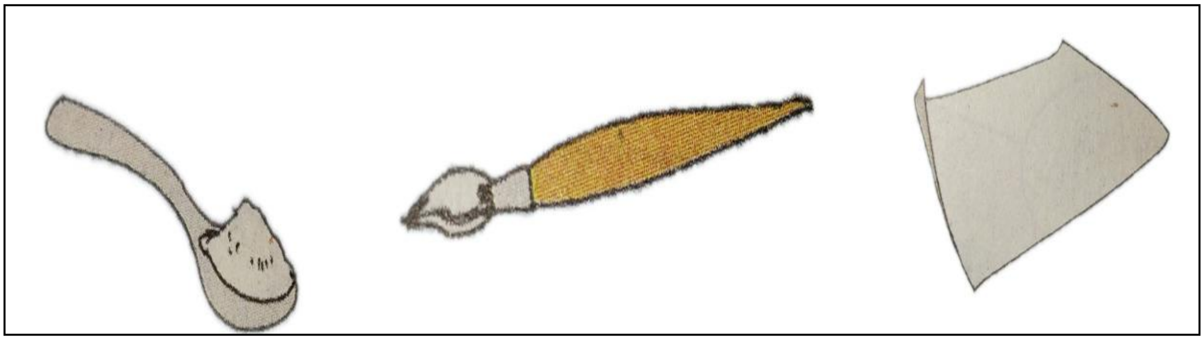

विधि - 1 चम्मच कोबाल्ट क्लोराइड को पानी में घोल लीजिये. अब ब्रश की सहायता से कागज़ पर इस घोल से मनचाहा चित्र बना लीजिये. जब तक कागज़ गील रहेगा तब तब चित्र नहीं दिखेगा. कागज़ के सूखने पर नीले रंग का चित्र उभर आता है. यदि चित्र न उभरे तो कागज़ को बिजली के बल्ब के आगे रखकर या कपड़े प्रेस करने वाली इस्त्री से गरम किया जा सकता है. ऐसा करते ही नीले रंग का चित्र उभर आता है. अब अपने मुंह से भाप कागज़ पर डालिये. चित्र फिर से गायब हो जाता है.

कारण - कोबाल्ट क्लोराइड एक ऐसा लवण है तो गीली अवस्था में रंगहीन होता है, परंतु सूखी अवस्था में इसका रंग नीला होता है, क्योंकि इसके क्रिस्टल्स से पानी निकल जाने पर इसका रंग नीला हो जाता है. कागज़ को गर्म करने पर कोबाल्ट क्लोराइड के क्रिस्टल्स से पानी निकल जाता है और इसका नीला रंग हो जाने से नीले रंग का चित्र दिखाई पड़ने लगता है. मुंह से भाप डालने पर कोबाल्ट क्लोराइड के क्रिसटल्स में फिर से पानी आ जाता है, और यह फिर रंगहीन हो जाता है.

भाखा जनउला

रचनाकार : दीपक कंवर

			1 बें		2 रा		
3 ग		4 आ					5
					6 त		री
7 ल							
							8
9 हा				10 कों		11	न
		12 ओं				ला	

बांये से दांये — 1. बंदर 3. गाय 6. तराजू 7. जल्दी–जल्दी 9. एक बड़ा बर्तन 10. सब्जी बेचने वाली 12. कपड़ा

उपर से नीचे — 2. गाय बैल चराने वाला 4. आम 5. बीस की संख्या 7. खरगोश 8. नमक 11. एक रंग

उत्तर

			1 बें	द	2 रा		
3 ग	रू	4 आ			उ		5 को
		मा			6 त	ख	री
7 ल	उ	हा	ल	उ	हा		
म							8 नु
9 हा	ड़ी			10 कों	च	11 नी	न
		12 ओं	ढा			ला	